आलोक पुरुषः प्रो अच्युत सामंत
और उनकीविश्वविख्यात शैक्षिक पहल'कीट'—'कीस'

''स जातो येन जातेन देशो याति सम्मुनतिम्''

—''उसी का जन्म लेना सार्थक है जो देश,राष्ट्र को उन्नति,प्रगति की सीमा तक पहुंचा दे।अथवा राष्ट्र की उन्नति,प्रगति के लिए समर्पित हो।''यह बात एक समय में पण्डित मदनमोहनजी मालवीय के लिए किसी ने कहा था।आज यह बात निर्विवाद रुप में कलिंग इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी;कीट और कलिंग इंस्टीट्यूट आफ सोसल साइंसेज;कीस के संस्थापक विदेह डा अच्युत सामंत के सामान्य एवं अति आकर्षक पारदर्शी व्यक्तित्व के साथ अक्षरशः लागू होती है।

''भारत के धरा—धाम पर जिनको कहते हैंश्रीजगन्नाथजी के अवतार,
उनकी विश्व विख्यात शैक्षिक पहल 'कीट'—'कीस' को जानें बारंबार।''

—सच मानिये,यह कोई प्रशस्ति गान नहीं है;अपितु वास्तविक सच्चाई है कि 1965 में ओडिशा के कटक जिले के कलरबंक गांव में एक गरीब परिवार में जन्म लेने वाले अच्युत सामंत जब मात्र चार साल के थे तभी इनके पिताजी का निधन हो गया।इनकी विधवा माताजी अपने चार बच्चों के भरण—पोषण के लिए जो कुछ कीं वह कोई साहसी गृहिणी ही कर सकती है।अच्युत सामंत को अपनी मां को सहयोग देने के लिए अपने बाल्यकाल की तमाम खुशियों को त्यागना पड़ा।इनकी मां के पास अपना तन ढकने के लिए एक साड़ी के अलावे दूसरी साड़ी भी नहीं थी।फिर भी मां है कि अपने चारों बच्चों को पढ़ा—लिखाकर अच्छा इंसान बनाने पर अड़ी हुई थी।बालक अच्युत के पास बचपन से ही एक अच्छा संस्कारमिलाा।गुरु,जगन्नाथजी और हनुमानजी की सच्ची सेवा और भक्ति।गुरु के सानिध्य में रहकर ये मन लगाकर पढ़े और अपने साथ—साथ अपने सभी भाई—बहनों को भी पढ़ाये।आज कीट—कीस के बदौलत लगभग 5लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है वहीं कीट—कीस में कुल लगभग 50 हजार छात्र,शिक्षक और शिक्षकेत्तर कर्मचारी हैं।डा अच्युत सामंत आज भी एक किराये के मकान में भुवनेश्वर में रहते हैं और कीस परिसर में पेड़ के नीचे अपना दफ्तर बनाकर नित्य कार्य करते हैं।डा अच्युत सामंत के सच्चे गुरु जगतगुरु शंकराचार्य एवं पुरी धाम गोवर्द्धनपीठ के पीठाधीश्वर परम पूज्य स्वामी निश्चलानंदजी सरस्वतीजी महाराज हैं।

मात्र पांच हजार रुपये की अपनी निजी जमा राशि से 1992 में आरंभ हुआ 'कीट' आज लगभग 18,000 बच्चे पूरे विश्व से यहां पर पढ़ रहे हैं और आज यहां पर लगभग 4000 संकाय व अन्य सदस्य कार्यरत हैं।वहीं मात्र 125 आदिवासी बच्चों को ओडिशा के दूर—दराज जंगली इलाकों से लाकर 1997 में आरंभ हुआ 'कीस'जहां आज लगभग 20,000 आदिवासी

बच्चे के.जी.से पी.जी.तक निःशुल्क समस्त अत्याधुनिक आवासीय सुविधाओं का उपभोग करते हुए पढ़ते हैं।प्रकृति के सुरम्य वातावरण में कुल लगभग 650 एकड़ विशाल भू–भाग परअवस्थित हैं ये दोनों ही संस्थाएं।के आई आई टी;कीट2004 में (यूजीसी एक्ट 1956 के सेक्शन 3 के अन्तर्गत) यूनिवर्सिटी घोषित किया गया।लिम्का बुक ऑफ रिकाड्र्स में आज इसका स्थान सुरक्षित है।विकास के क्रम में रुरल मैनेजमेंट, बॉयो टेक्नोलॉजी, लॉ, मेडिसिन और डेन्टल साइंस में, बैचलर ,मास्टर डिग्री कोर्स आरंभ हुए। आज इसके 27 घटक स्कूल हैं।इंजीनियरिंग, एमसीए, मैनेजमेंट, रुरल मैनेजमेंट, लॉ, बॉयोटेक्नोलॉजी, एमबीबीएस, एमडी, बीडीएस, नर्सिंग, फेसन टेक्नोलॉजी, सिनेमा एण्ड मास मीडिया स्टडीज, लैंग्वेज एण्ड स्कल्पचर में ग्रेजुएट और पोस्ट ग्रेजुएट स्टडी को जारी रखने वाले 18,000 छात्रों के साथ, कीट अपनी एक अविस्मरणीय पहचान बना चुका है।इस यूनिवर्सिटी के छात्र छात्र–आचारसंहिता का अनुपालन करते हुए पूरी तरह से अनुशासित हैं।कीट विश्व का एक सुनियोजित और विकेन्द्रित तकनीकी संस्थान है।यहां पर अत्याधुनिक प्रयोगशालाएं व अनुसन्धान केंद्र हैं।यहां पर नियमित राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, सिम्पोजियम और वर्कशाप समय–समय पर आयोजित किये जाते हैं और शतप्रतिशत प्लेसमेंट का कीर्तिमान इसके नाम है।कीट आज विश्व उत्कृष्ट नॉलेज सेंटर बन चुका है।आज इसका करार 50 विश्व के नामी विश्वविद्यालयों के साथ है।मात्र 20 वर्ष की अल्पावधि में ही इस संस्थान ने सफलतापूर्वक विकास की वह यात्रा पूरी कर ली है जहां तक पहुंचना प्रायः असंभव है दूसरे संस्थानों के लिए।

'कीस' है भारत का दूसरा शांतिनिकेतन

'कीस'' आज समस्त अत्याधुनिक शैक्षिक सुविधाओं से युक्त विश्व का एकमात्र ऐसा आदिवासी आवासीय विद्यालय है जहां पर लगभग 20,000 आदिवासी अनाथ बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।हाल ही में यहां पर पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक कक्षाओं की पढ़ाई आदिवासी मातृभाषाओं में आरंभ की गई है जो भारत की पहली पहल है।यह अनोखी संस्था हर प्रकार से वास्तव में भारत का दूसरा ''शांतिनिकेतन'' बन चुकी है जिसे अब एक वास्तविक तीर्थस्थल माना जाने लगा है और कहने वाले तो अब यह भी कहने लगे हैं कि यह आज विश्व का सबसे बड़ा दरिद्रनारायण सेवा केंद्र है जहां के गरीब आदिवासी बच्चों के साथ–साथ उन बच्चों के अभिभावकों को डॉ. अच्युत सामंत की ओर से जाड़े के दिनों में हर साल मुफ्त दामी कंबल एवं अन्य उपहार अभिभावकों को दिये जाते हैं।आज ''कीस'' के बच्चे रुग्बी के अलग–अलग समूहों में विश्वविजेता का खिताब जीतकर भारत लौटते हैं।''कीस'' का प्रबंधन, शैक्षिक परिवेशष एवं पठन–पाठन हर तरह से विश्व शिक्षा जगत के लिए अनुकरणीय एवं वंदनीय प्रयास है।हाल ही मेंविश्व आध्यात्मिक जगत के प्रणेता,भारतीय सनातन धर्म के प्रवर्तक,भारतीय संस्कृति के आजीवन संदेशवाहक जगतगुरु शंकराचार्य एवं पुरी के पीठाधीश्वर परमपाद स्वामी निश्चलानंदजी सरस्वती महाराज ने कीस का दौरा किया और यहां के कुल 20 हजार आदिवासी बच्चों को भारतीयता के आदर्श एवं शाश्वत जीवन मूल्यों को अपनाने का अपना पावन सदंश दिया।22 जुलाई को गुरुपूर्णिमा के पावन पर्व पुरी गोवर्द्धन मठ जाकर कीट–कीस के संस्थापक डा अच्युत सामंत ने अपने गुरुदेव का आजीवन कर्मयोगी बनने का आशीष प्राप्त किया।28 अगस्त,2013 को पावन जन्माष्टमी पर पुरी जाकर डा सामंत ने अपने गुरुदेव जगतगुरु से धर्म की वास्तविक जानकारी प्राप्त की और अपने गुरुदेव

के गोशाला पहुंचकरकुल 135 गायों की पूजा की और समस्त गायों को गौग्रास के रुप में केला,खीरा,गुड़ की मिठाई आदि खिलाया।सच तो यही है कि भारतीय संस्कृति में आस्था और विश्वास रखनेवाले कीट–कीस के संस्थापक अपनी विश्व स्तरीय शैक्षिक पहल से विश्व के महान शिक्षविद बन चुके हैं और आज इनकी दोनों ही विश्वविख्यात अनोखी संस्थाएं विश्व शिक्षाजगत की यथार्थ आदर्श बन चुकीं हैं।
प्रस्तुतकर्ताःअशाोक पाण्डेय